Historicity Research Journal
ISSN : 2393-8900

Impact Factor : 1.9152 (UIF)
Volume - 3 | Issue - 12 | Aug – 2017

स्वतंत्रता संग्राम में प्रमुख भारतीय महिला स्वतंत्रता सेनानियों का योगदान

डॉ. विक्रम रामचंद्र पवार
देशभक्त संभाजीराव गरड महाविद्यालय मोहोळ.

प्रस्तावना :

सरजमीने हिंदुस्थान को पारतंत्र कि बेडियों से मुक्त करने के लिए हिंद भूमि के हजारों चिरागों ने अपने प्राणों कि आहुतियाँ दी। अपनी तमाम आकांक्षाओं, सपनों, सुखों का गला घोंटा और अत्यंत प्रतिकुल जीवन व्यतीत किया। अंग्रजों के अनंत अत्याचार सहन किए। घर बार और नाते रिष्ते का परित्याग किया। अपने जीवन के, जवानी के महत्वपुर्ण वर्श देष कि आन के लिए निछावर कर दिए।

यह दर्दनाक जीवन उन हजारों क्रांतिकारियों ने स्वीकारा केवल भारत भू को स्वतंत्र करने के लिए। क्रांतिकारी भारत को तुरंत स्वातंत्रता दिलाने में भलेही सफल नही हुए लेकिन स्वतंत्रता आंदोलन की नींव उन्होने तैयार की। भारतियों में देषप्रेम कि भावना जगाना; मर चुकि लडने कि भावना को पुर्नजीवित करना; जन आंदोलनों के लिए नए रास्ते तैयार करना धर्म जाति से परे राश्ट्रहित कि ओर दृश्टि आकृश्ट करना,जनतंत्र की विचारधारा का प्रचार करना, इन्ही कीदेन है। जिस राह पर चलकर देषप्रेम वृध्दिंगत हुआ।भारतीय जनमानस में नवचेतना का संचार हुआ।व्यक्तिगत स्वार्थ से परे देषहित भी होता है। यह भावना निर्मित हुई। नारी और पुरुश के भेद समाप्त होकर जन आंदोलन में दोनों कंधेसे कंधे मिलाकर कार्य करने लगे।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम ही था जहाँ महिलाओं को धर और चुल्हे की परंपरागत कारागृह से मुक्ती मिली। उनके धैर्य, कर्मरत रहने की प्रवृत्ति कठिन यातना सहन करने का जजबा ही स्वातंत्रता का तिव्र आंदोलन खडा करने में काम आया। अपने अतुल्य साहस एवं निर्णय क्षमतासे कई महिलाओं ने स्वातंत्रता आंदोलनों को सकारात्मक राहों पर मोडा।यह बात दुसरी है की अतुलनीय योगदान के बावजूद महिलाओं के सषक्त स्वातंत्रता योध्दा चरित्र काल के पन्नों पर सिमटकर रह गए। हम ऐसे ही उज्वल परंतु इतिहास की किसी तारीख में न उभरे चरित्रों पर प्रकाष डाल रहे हैं।

झांसी की राणी लक्ष्मीबाई

राणी लक्ष्मी बाई का जन्म १९ नवंबर १८३५ को बनारस में हुआ था।११वर्ष की उम्र में उनका विवाह झांसी के राजा गंगाधर राव से हो गया। विवाह के ३ साल बाद राणी लक्ष्मी बाईने पुत्र को जन्म दिया लेकिन दुर्भाग्य से जन्म के तीन महीने बाद ही उनका पुत्र चल बसा। राजा ओर राणी नें दामोदर राव नामक बालक को दत्तक लिया।

गंगाधर राव की मृत्यु के बाद झांसी का राजकाज राणी लक्ष्मीबाई स्वयं देखने लगीं। अंग्रेजों ने इसका फायदा उठाया। उन्होंने दामोदर राव को गोद लेने की रस्म की मान्यता नही दी और झांसी को ब्रिटिष षासन में सम्मिलित कर लिया। परंतु लक्ष्मीबाई ने उसका पुरजोर विरोध करते हुए ललकारा “मै अपनी झांसी नही दूँगी।”

अंग्रेजों ने राणी से किला खाली करा लिया। इन्ही दिनों पेषवा के सेनापति तात्या टोपे रानी से मिलने के लिए आए। उन्होंने रानी को सलाह दी वह अपनी सैनिक तैयारी रखे। क्रांति की ज्वाला किसी भी समय भडक सकती है।रानी ने भी चुपचाप अपनी सैनिक तैयारियाँ जारी रखीं।

क्रांति के लिए ३१मई १८५७का दिन निष्चित किया गया था। लेकिन ६ मई को मेरठमें ज्वाला भडक उठी। ५जुनको झांसी में सैनिकोने बगावत की। छावनी लूट ली और किले पर धावा बोला। किले का षासन रानी लक्ष्मीबाई केहाथों में आ गया। अंग्रेजों के विरोधी होते हुए भी रानी लक्ष्मीबाई धार्मिक विचारों की महिला थीं। उन्होने संकट की घडी में अपनी षरणमें आए हुए अंग्रेजो के बीबी बच्चों को अपने महल में षरण दी और उनकी रक्षा की।

टिकमगढ रियासत के दीवान नत्थे खाँ झांसी को अपने राज्य में मिलाना चाहते थे । उन्होंने अंग्रेजों कि षह परअपने २०००० सिपाहियों की फौज लेकर झांसी पर हमला किया। लेकिन लक्ष्मीबाई ने आक्रमणकारी नत्थे खाँ को मार भगाया। रानी ने लगभग दस महीने तक झांसी का राज्य षासन चलाया । अंग्रेज सरकार ने उन्हे बागी करार दिया और उसकी एक सैनिक टुकडी ने रानी को कैद करने के लिए झांसी पर हमला किया।रानी का प्रतिरोध कम पडा और वे किले से निकलकर पेषवा के पास कालपी चली गई। उन्होने झांसी से कालपी का १००मील का रास्ता घोडे के पिठ पर बैठे बैठे चौबीस घंटो में तय किया। ईस अभियान में उन्होंने अपने पुत्र दामोदरराव को अपनी पीठ पर बाँध लिया था।रानी लक्ष्मीबाई का विचार था, कि क्रांति सैनिकों को किसी सदृढकिले को अपने नियंत्रन में लेना चाहिएतभी वह अंग्रेजी फौज का ठीक तरह से मुकाबला कर सकते हैं । रानी की सलाह पर पेषवा ने ग्वालियर पर अधिकार कर लिया।

ब्रिगेडियर स्मिथ ने ग्वालियर पर हमला किया। क्रांति सेना का नेतृत्व रानी लक्ष्मीबाई ने किया। रानी ने प्राणों कोहथेली पर रख कर वीरता से युध्द किया ।लेकिन उनकी सेना पराजीत हुई। रानी बुरी तरह धायल हो गई। उन्हे लगाकि अंत समय नजदीक आ गया है। रानी ने अपने सिपाहियों को आज्ञा दी कि उनका षरीर किसी तरह अंग्रेजों के हाथ न लगने पावे। सिपाही पास ही स्थित बाबा गंगादास की कुटी में ले गए । रानी ने वहीं पर अंतीम सांस ली। सिपाहियों ने उनका अंतिम संस्कार कर दिया ।

वास्तव में १८५७ कि क्रांतिज्योति थीं झांसी की रानी लक्ष्मीबाई । रानी षौर्य और बलिदान की जीती जागती मूर्ति थीं। उनका जीवन देष भक्ति का अतुल्य उदाहरण प्रस्तुत करता है।

अवध की बेगम हजरत महल

१८५७ की महिला स्वतंत्रता सेनानियों मेंझांसी कि रानी लक्ष्मीबाई के बाद अवध कि बेगम हजरत महल का नाम विषेश रूप से उल्लेखनीय है।

लॉर्ड डलहौजी भारत का गव्हर्नर (१८४८) बनकर आया । उसने अपनी बेदखली कि नीति व्दारा सतारा, संभलपुर,झांसी और नागपुर पर कब्जा किया । अब उसकी ललचाई दृश्टि अवध पर थी।

रेजीमेंट आउटरम के नेतृत्व में १३फरवरी १८५६ कोवाजीद अली शाह को कैद कर लिया और लखनउ से कलकत्ता भेज दिया गया ।बेगम हजरत महल कलकत्ते नहीं गईं। बेगम हजरत महल ने गुप्त रूप से सैनिक तैयारियाँ शुरू कर दी। विभिन्न वर्गों में भी अंग्रेजी शासन के विरोध मे असंतोष बढ रहा था । ६ मई को मेरठमें इस असंतोष की ज्वाला भडक उठी । १६ मई को उन्होने दिल्ली पर अधिकार कर लिया और बुढे मुगल सम्राट बहादुर शाह जफर को अपनानेता चुना । बेगम हजरत महल को ऐसे ही मौके कि तलाश थी । ३१ मई १८५७ लखनउ छावनी की पलटनों ने विद्रोह कर दिया । दस दिन के भीतर ही लखनउ शहर के कुछ भागों को छोडकर समुचे अवध पर क्रांतिकारियेां का अधिकार हो गया । अवध के अनेक जमींदार व्यापारी सिपाही आदि बेगम के नेतृत्व में एक हो गए । ७ जुलै १८५७ को बिरजीस कद्र को बादशहा बनाया गया और बेगम हजरत महल उसकी संरक्षिका बनी ।बेगम हजरत महल को जनाब—ए—आलियाका खिताब दिया गया ।

इस समय हजरत महल पर अवध के शासन कि पुरी जिम्मेदारी थी । उनके सामने अनंत चुनौतियाँ थी । विदेशी शत्रुओं का संकट था । अनिश्चितता का वह वातावरण था । प्रशासनिक उथल पुथल हो रही थी । सेना में अनुशासनहिनता थी । व्यक्तीगत हितसबसे उपर था । बेगम हजरत महल ने सारी समस्याओं का धैर्य पूर्वक सामना किया । वे हिंदुओं और मुसलमानों मे समान रूप से लोकप्रिय थी ।

अवध के क्रांतिकारियों नें २ जुलाई १८५७को हेनरी लारेंस की तथा २७ सितंबर १८५७ को जनरल नील की हत्या कर दी । बेगम हजरत महल के नेतृत्व में अवध की अनेक महिलाओंने पुरूष वेष में क्रांति में भाग लिया ।

इस प्रकार इतिहास में कम प्रकाश पडने के कारण एक जाज्वल्य स्त्री का उज्वल चरित्र अद्युता रहा ।

डॉ लक्ष्मी सहगल

अंग्रेज सरकार के खिलाप नेताजी सुभाषचंद्र बोस ने आजाद हिंद फौज तैयार कि थी । इस आजाद हिंद फौज में डॉ लक्ष्मी सहगल को रानी झांसी रेजीमेंट की कमान सौंप दी गई थी । साथ हि उन्हे अंतरीम सरकार में मंत्री नियुक्त किया
गया । भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में आझाद हिंद और लक्ष्मी सहगल का नाम अजरामर है ।

डॉ लक्ष्मी सहगल की पहली मुलाकात १९४३में सुभाषचंद्र बाबु से सिंगापुर में हुई । वही पर सुभाष बाबु ने सहगलजी कौ रानी झांसी रेजीमेंट को लडाई में आगे बढने का हुक्म मिला ।

बर्मा भारत मोर्चे के धमासान में डॉ लक्ष्मी सहगल ने अतुलनीय पराक्रम दिखाया । पिछड रही फौज के बीमार साथियों के उपचार के लिए उनका डॉक्टरी ज्ञान भी काम आया ।

क्रांतिमूर्ति दुर्गा भाभी

भारतीय स्वतंत्रता अंदोलन की क्रांतिकारी महिलाओं में दुर्गा भाभी का कार्य अतुलनिय हैं । उनके पति भगवती बाबु का क्रांतिकारियों से संबंध था। उनके साथियों में चेद्रशेखर आझाद; सुखदेव; भगतसिंग; राजगुरु;बटुकेश्वर दत्त आदि प्रमुख थे । इसी कारण दुर्गा भाभी भी क्रांतिदल के छोटे मोटे कार्यो मे भाग लेने लगीं ।वे दल के लिए पैसा इकठठा करती थी । क्रांती से संबंधीत परचे बांटती थी ; धर पर आए क्रांतिकारीयों को आश्रय देती थी ।

सांडर्स की हत्या के बाद भगतसिंहजी जब कलकत्ते जानेवाले थे तब दुर्गा भाभी भगतसींहजी की पत्नी के रुप मेंउस यात्र पर चली गई । उद्देश्य था कि किसी तरह पुलीस कि आँखोमें धूल झोंकना । भाभी ने कोट कि जेब में भरी पिस्तैल छीपा रखी थी । यह जोखिम भरी यात्रा सफल रही ।

केंद्रीय विधानसभा में बम फेंकने के लिए भगतसिंहजी जब जेल में थे तब भाभी ने भगतसींहजी से संपर्क बनाए रखा । उन्होने भगतसींहजी की रिहाई के लिए दिल्ली जाकर महात्मा गांधीजीसे भी भेंट की।

चंद्रशेखर आजादने भाभी को क्रांतिकारी कार्य के संगठन के लिए बंबई भेजा । बंबई में भाभी ने बाबा पृथ्वीसिंह आजाद के सहयोग से पुलिस कमिशनर हेली को मारने की योजना बनाई लेकीन वह असफल रही । पुलीस ने दुर्गा भाभी तथा उनके साथियों को फरार धोषित किया । भाभी के तीन मकान लाहोर में और दो इलाहबाद में थे । लेकीन वे सरकार ने जब्त कर लिए । उन्हे आश्रय के लिए दर दर की ठोकरे खानी पडी ।चंद्रशेखर आजाद की मृत्यु के बाद भाभी पर भयंकर संकट के दिन आए । १४ सितंबर१९३२ को पुलीस ने उन्हे लाहोर में गिरफतार कर लिया । सरकार ने उनपर मुकदमा चलाया ।

इस प्रकार एक समर्पित क्रांतिकारी जीवन दुर्गा भाभी ने व्यतीत किया । जो भारतीयों के लिए वंदनीय है ।

मैडम भिकईजी रुस्तम कामा

भारत के स्वतंत्रता संग्राम में भारत के सभी जाति धर्मो के नागरिकों ने अपना योगदान दिया है ।पारसी धर्म भारत में अल्पसंख्य है परंतु उसके भी अनेक सदस्य स्वतंत्रता संग्राम में अग्रणी रहे है ं। उन्ही में से एक है मैडम भिकईजी रुस्तम कामा । स्वतंत्रता संग्राम के आरंभिक दौर में मैडम कामा ने विदेशों में ३५ वर्ष तक क्रांति की दीपशिखा को प्रज्वलित रखा।

लंदन में भिकई जी का श्यामजी कृष्ण वर्मा और वी डी सावरकर से परिचय हुआ । इन दोनो व्यक्तियों के संपर्क में आने के बाद भिकईजी क्रांतिकारी बन गई । १९०६ से १९१४ तक उन्होंने लंदन पेरिस और जिनेवा में भारतीय स्वतंत्रता के पक्ष में प्रचार किया । मैडम कामा इंडिया हाउस से संबंधित देशवासियों को क्रांति की शिक्षा देती थी ं। युरोप के अधिकांश क्रांतिकारियों से उनका परिचय था । उन्होने क्रांतिकारियेां को सैनिक प्रशिक्षण देने के लिए गुप्त रुप से हथियार भी एकत्रित किए थे ।

१९०९ में भिकईजी कामा ने हरदयाल के सहयोग से वंदे मातरम पत्र निकालना आरंभ किया । यूरोप और अमरीका में भिकई जी कामा को क्रांति जननी कहा जाता था ।

मैडम कामा के जीवन का सबसे महत्वपूर्ण समय वह था जब उन्होंने १९०७ में स्टटगार्ट सम्मेलन में एक ओजस्वीभाषण दिया जिसमें उन्होने अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में स्वतंत्र भारत का ध्वज फहराया ।

मैडम कामा को लोग काली का अवतार मानते थे । उनके अपने संबंधी भी उन्हे खतरनाक क्रांतिकारी मानते थे।वास्तव मे मैडम कामा एक जोशीली विद्रोही थी ।

सरोजिनी नायडू

पारतंत्र में जकडे भारत की महिलाओं का जीवन एक तरफ अत्यंत दयनिय था तो दुसरी और चंद भारतीय महीलाओं ने तमाम बंधनों के बावजुद अपनी प्रतिभा और लगन से विश्वभर में अपना नाम किया । ऐसी महिलाओं में अग्रणी थीं सरोजनी नायडू ।

सरोजीनी नायडू एक अत्यंत प्रतिभाशाली कवयत्री थी । उनकी कविताएँ लंदन एवं युरोप में प्रसिध्द थी । उनके कई
काव्य संग्रह लंदन से प्रकाशित हुए और उनकी काफी सराहना भी हुई ।

सरोजीनी नायडू की भारतीय राजनीती के शिखर पुरुष गोपाल कृष्ण गाखले से पहीली मुलाकात १९०२ में हुई थी ।

गोखले की प्रेरणा से सरोजनी ने देश के विभिन्न भागोंका दौरा करणे और सामाजीक राजनीतीक महत्व के विषयों पर व्याख्यान देने का क्रम आरंभ किया । सरोजिनी नायडू ने १९०५ के स्वदेश आंदोलन में भाग लिया था । १९०६ में उन्होने कलकता में भारतीय समाज सम्मेलन में भारतीय स्त्रियों कि शिक्षा विषय पर भाषण दिया ।

सरोजिनी नायडू गांधीजी से प्रभावित होकर उनके अंदोलन मे भाग लेने लगी । १९२८ में गांधीजी ने सरोजिनी नायडू को अमरीका और कनाडा भेजा । सरोजिनी नायडू की इस यात्रा का उद्देश नई दुनिया के लोगों को भारतीय स्वतंत्रता संग्राम कि समस्याओं से परिचीत कराना तथा उनका समर्थन प्राप्त करना था । गांधीजी की दांडी यात्रा मेंवे साथ थी । उन्हे गिरफतार किया गया । गांधीजी कि गोलमेज परीषदमें भी नायडू उनके साथ थी । १९४२में भारत छोडो आंदोलन का बिगुल बजा । महात्मा गांधी और कई दुसरों के साथ सरोजिनी नायडू को आगा खाँ महल में बंदी बनाया गया ।

इस प्रकार भारतीय स्वातंत्रता संग्राम में अपने प्राणों कि पर्वा किये बगैर इन महिला क्रांतिकारियों ने देश प्रेम का अदभुत प्रदर्शन किया है । इनका राष्ट्रप्रेम देशवासियों के लिए अनुकरणीय है । नारी कि कमजोरीयां पर उंगली रखकर उनके हितों पर आक्रमण करने वाले स्वार्थांध लोगों के मुह पर इन असामान्य महिलाओंका चरित्र करारा तमाचा जडता है। जब तक भारत प्रेम कि बात चलती रहेगी तब तक इन नारियों का सिक्का बोलता रहेगा ।